।। तेजा चौधरी को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| तेजा चौधरी को संवाद ||

|| साखी ||

सुण तेंजा सुखराम कहे, ओ मोसर मत चुक ।
जीती सार न हारिये, संसवो होयकर द्रूक ।।१ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज तेजा चौधरीसे कहते है कि तुझे प्राप्त हुयेवे यह मनुष्य देह का अवसर चूक मत । यह मनुष्य देह प्राप्त होना,यह जन्म मरण के फेरेसे निकलने के लिये जीती हुअी बाजी है उसे हार मत । इसलिये अब तू हिम्मत कर व मजबूती से राम भजन कर। ।।१।।

सुन तेजा सुखराम कहे, डाव न चुके बीर ।
ओ मोसर बेहे जावसी, ज्यूं सिलता को नीर ।।२ ।।

भाई तेजा,यह जन्म मरण के फेरेसे निकलने के लिये भारी अवसर मिला है । यह मिला हुआ मनुष्य देह का दाव गमा मत । जैसे नदी का पानी,बहकर चला जाता है,वह पुन: लौटकर नदी मे नही आता इसी तरह मनुष्य देह के जो श्वाँस जाते है,वे पुन: नही आते । हे भाई तेजा, मनुष्य देह मिला व सतगुरू भी मिले ऐसा अवसर मिलना दुर्लभ है । यह अवसर तुझे मिला है । मनुष्य देह मिला परंतु जन्म मरण मिटानेवाला जाणकार गुरू नही मिला व अनाडी गुरू मिला तो अनाडी गुरू जीव का अकाज कर देता है,याने हंस का जन्म मरण फेरा मिटाने का काज बिघड जाता है ।) ।।२।।

सुण तेजा सुखराम केहे, गुर सो बेद अजाण ।
बेरी की गरज साजसी, यूं कहे वेद कुराण ।।३ ।।

गुरू और वैद्य अनाड़ी मिल गये,तो दुश्मन की गरजपूर्ति करते है । जैसे वैद्य अनाडी रहा,तो जीव का अकाज कर देता है । वैसेही गुरु अग्यानी मिला याने जन्म मरण का फेरा मिटानेवाला नही मिला तो जीव का अकाज करता ऐसा हिन्दूके वेदमे और मुसलमानो के कुराण मे कहा है । ।।३।।

नांव जडी सागे कणें, कळ किंमत नहीं काय ।
सुण तेजा सुखराम कहे, पाया रोग न जाय ।।४ ।।

अनाडी वैद्य के पास जडी सच्ची है परन्तु वैद्य को जडी देनेकी कला,हिकमत मालूम नही है तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज,तेजा को कहते है,ऐसे वैद्य से जडी खानेसे भी रोग नही जाता इसीप्रकार अनाडी गुरू के पास नाम असली है परन्तु नाम लेनेके कला,हिकमत मालूम नही है तो उस नामसे तिरनेका गुण शिष्य मे नही प्रगटता। जैसे गुरू के पास रामनाम है परन्तु उसे आते जाते सांस मे रामनाम लेनेकी विधी मालूम नही है तो शिष्य घटमे निजनाम ने:अंछर प्रगट नही होता । जीससे शिष्य का आवागमन नही मिटता ।

झाडा औषध नांव रे, सुण सागे ही होय ।
जस बिन सुण सुखराम कहें, कारी लगे न कोय ।।५ ।।

झाडा झपाटा,दवाई और नाम सच्चा है,मतलब ज्यो का त्यो है परन्तु झाडा झपाटा,दवाई नाम देनेकी हिकमत मालूम नही है तो ऐसे वैद्य से वे गुरू से हंस का काम होता नही । ।।५।।

झुठा गुरु के पासरे, झुठा शिष चल जाय ।
सुण तेजा सुखराम कहे, दोनु सुधन काय ।।६ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज,तेजा कहते है की झूठे गुरू के पास अनाडी शिष्य गया तो गुरु व शिष्य ये दोनो ही धोका ही खायेंगे ।

सुण तेजा सुखराम कहे, समज सोच मन मांय ।
अबके मोसर चुकीयां, जुग जुग परले जाय ।।७ ।।

इसलिये आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज,तेजा चौधरी से कहते है कि समझ कर मन मे विचार कर । इस बार का अवसर याने मनुष्य शरीर प्राप्त होकर,सतगुरू भी मिलना ऐसा समय,चूक जाने पर,युगों-युगो मे,प्रलय मे ही पड्ना है । ।।७।।

मोसर चुकां बात को, बोहों पिस्तावो होय ।
जन सुखदेव जी केत हे, सुणज्यो रे सब लोय ।।८ ।।

यह अवसर चूक गया तो बाद मे,इस बात का बहुत ही पश्चाताप होगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज,तेजा चौधरी एवम् सभी लोगोको यह ज्ञान सुण के समजने को कहते है । ।।८।।

कन फुंका गुरु हद का, भावे सो कर आय ।
सतगुरु बिन सुखराम के, सांसो कदे न जाय ।।९ ।।

ये कान फूंकनेवाले गुरू,सभी हद के याने कालके मुखसे न छुडानेवाले है । ऐसे गुरू यदि सौ गुरू भी किए तो भी सतगुरू के बिना काल छुट्नेकी चिंता कभी नही जायेगी । ।।९।।

सदगुरु क्यूं कर जाणीये, आ पारख कहो मोय ।
ग्यानी तो सुखराम के, नाना बिध का होय ।।१० ।।

तेजा चौधरी पूछता है कि सतगुरू कैसे पहचाने इसकी पहचान मुझे बताइए?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज तेजा से बोले संसार मे ज्ञानी तो नाना विधी के है । ।।१०।।

आ सतगुरु की पारखा, सुणज्यो चित दे कान ।
केवल बिन सुखराम क्हे, भजे न दूजो जाण ।।११ ।।

उनमे सतगुरू की परख निम्न प्रकारकी है उसे चित्त और कान देकर सुण । वे सतगूरू कैवल्य के बिना दूसरे किसी का भजन नही करते है । ।।११।।

अनभे कागद लावीया, ब्रह्म देश सुं जाय ।

सो तारे सुखराम के, हँसा कुं जुग मांय ।।१२ ।।

अणभे कागज याने सतगुरू पदवी याने जीव को तारने का परवाना जिन्होने सतस्वरुप ब्रम्ह देश से लाया है वे ही जीव को संसार से याने भवसागर से तारेंगे । ।।१२।।

कन फुँका की क्या चली, सागे सतगुरु होय ।
अनभे बिन सुखराम कहे, तार सके नहीं कोय ।।१३ ।।

इस कान फुंकनेवाले गुरूका क्या चलेगा?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है की सतगुरू ज्ञान मे,सतगुरू के समान ज्ञान परिपुर्ण भी रहे तो भी ज्ञानी सतगुरू से हंस नही तिरते । जीन्हे सतस्वरुप के ब्रम्ह देश मे पहुँचनेका अनुभव है वेही हंस को तार सकते । जीन्हे सतस्वरुप के वह देश को पहुँचनेकी कला मालूम नही है,वे हंस को तार नही सकते । ।।१३।।

अनभे कागद हात दे, हर भेज्या जुग मांय ।
सो हंसा कुँ तारसी, सुखदेव कहे बजाय ।।१४ ।।

जिसके हाथो मे,अणभे कागज याने हंस तारनेकी कला देकर संसार से हंसोको तारनेको भेजा है वे ही हंसो को तारेंगे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराजने सभी हंसो को व तेजा को बजाके कहा है । ।।१४।।

जीण जन कुँ दुवो हुवे, हंस तारण को देख ।
ता संग सुखदेव उधरे, क्या ग्रेही क्या भेक ।।१५ ।।

जिस संत को हंस तारने की परवानगी है याने बंकनालसे उलटकर गढपे चढनेकी विधी मालूम है वैसे ही साध के संगत से हंस का उध्दार होगा फिर वो गुरू वैरागी हो या गृहस्थी हो । जीव तारने की परवानगी रहे बिना,कोई हंस को तार सकता नही फिर वह गुरू वैरागी हो या गृहस्थी हो कैसा भी क्यो न हो,वे हंस को तार नही सकते । ।।१५।।

दुवा बिन सुखराम कहे, तार सके नहीं कोय ।
क्या ग्रेही बेराग रे, भावे सो गुर होय ।।१६ ।।

हंस तारने की परवानगी के बिना हंस को चाहे वह गुरू गृहस्थी हो या बैरागी हो,कोई तार नही सकता । ।।१६।।

जे जन तारन आवींया, दुवो ले जुग माय ।
वांसु मिल सुखराम कहे, नरका अंक न जाय ।।१७ ।।

जो संत,हंसो को तारने का परवाना लेकर संसार मे,हंसो को तारने के लिए आये है । वे संत मिलने पर उस संत से मिला हुआ हंस एक भी नर्क मे नही जायेगा । ।।१७।।

जे जन तारन आवीया, ज्यारा अे अेनान ।
सुखदेव मिलता प्रगटे, शिष मे साहेब आण ।।१८ ।।

जो संत,हंसो को तारने के लिए आये है उनकी यह निशाणी है । उनसे शिष्य जाकर

मिलते ही शिष्य मे साहेब आकर प्रगट होते है यह उस संत की निशाणी है । ।।१८।।

अणभे कागद बाहेरा, भावे सा जन होय ।
वा के संग सुखराम कहे, हंसो तिरे न कोय ।।१९।।

अणभे(जीव को तारने का परवाना)रहे बिना कैसा भी संत रहा तो भी उसकी संगती से हंस तरेगा नही । ।।१९।।

ज्यूँ नर प्यादो सेरकों, यूँ अनभे बिन साध ।
सुखदेव सांच न मानीयो, सब मिथ्या हे बाद ।।२०।।

जैसे बेलिफा यह एक प्रकार का कोर्ट का कर्मचारी रहता,उसके पास यदी समंस या वारंट नही रहा तो उसकी बात कोई मानता नही वैसे ही अणभे याने हंस तारने परवाना के बिना,जो साधू है उनकी बाते झूठी समझकर उनकी बात,सत्य मानो मत । ।।२०।।

परवाना बिन बाहेरो, प्यादो खेले घात ।
अनभे बिन सुखराम कहे, यूं शिष मिल्या न जात ।।२१।।

परवाना याने समंस या वारंट के बिना,बेलिफा वह कितना भी दावपेंच खेला तो भी उसकी बात मानो मत । ऐसे ही अणभे याने हंस तारने का परवाने के बिना ऐसे जो गुरू है,उनकी बात मानो मत । ऐसे गुरु के पास शिष्य जानेसे तीर नही सकता । ।।२१।।

प्रवाणो ले आवीया, से जन जुग के मांय ।
सो ताकीदी देत हे, सुखदेव बोहो बिध आय ।।२२।।

परवाना लेकर,जो संत संसार मे आये है वे हंस को अनेक प्रकार की समज देते है व हंसोको भवसागर से पार कराते है । ।।२२।।

।। इति तेजा चौधरी को संवाद सपूर्ण ।।